Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A - Part I Paper - II
Metaphysics and Epistemology

1st

GRB BOOKS

Notes

"Rationalism" (बुद्धिवाद)

"बुद्धिवाद वह ज्ञान-शास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा ही हो सकती है, किसी दूसरे साधन से नहीं।"

बुद्धिवाद का कथन है कि हमें निश्चित और सार्वभौम ज्ञान होता है और यह ज्ञान इन्द्रियानुभव से न आकर हमारी बुद्धि से स्वतः सिद्ध और सहज नियमों से आता है। अर्थात् बुद्धिवाद मानता है कि —

1. ज्ञान की उत्पत्ती का साधन बुद्धि है, अनुभव नहीं।

2. ज्ञान के आधारभूत प्रत्यय जन्मजात हैं। इन्हीं से ज्ञान उद्भूत होता है।

3. बुद्धिवाद स्वभावतः क्रियाशील है क्योंकि अपने अन्दर से वह ज्ञान उत्पन्न करती है। जैसे — मकड़ी अपने अन्दर से ही सारा जाल बुन डालती है।

4. ज्ञान के प्रमुख अंग निगमनात्मक है क्योंकि सहज प्रत्ययों से निगमन विधि द्वारा सारा ज्ञान प्राप्त होता है।

5. दर्शन का आधार गणित विज्ञान है गणित को आदर्श रखने से दर्शन का आधार पूर्णतः निश्चित अनिवार्य और सार्वभौम ज्ञान है। जैसे 2+2=4 होते हैं तीन सीधी रेखाओं से घिरे क्षेत्र को त्रिभुज कहते हैं।

बुद्धिवाद के सामने दो मुख्य समस्याएँ प्रस्तुत होती हैं जिनका समाधान उनकी स्थापना के लिए आवश्यक है। वे यों हैं —

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

ज्ञान के आधारभूत सहज प्रत्ययों का स्वरूप क्या है? बुद्धिवाद के अनुसार संभावना या बीज के रूप में ज्ञान बुद्धि की बनावट में ही निहित रहता है। इसलिए इस बीज-रूप ज्ञान का स्वरूप निश्चित करना आवश्यक है।

दूसरी समस्या ज्ञान की प्रामाणिकता को लेकर है। बुद्धिवाद मानता है कि बुद्धिजन्य ज्ञान विश्व का सत्य चित्र प्रस्तुत करता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि जो ज्ञान पूर्णतः मनः प्रसूत है, जिसे बुद्धि अपने अन्दर से बाहरी चीजों की ओर बिना देखे उत्पन्न करती है वह कैसे विश्व के विषय में सत्य होता है? इसका उत्तर अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसके बिना बुद्धि को यथार्थ ज्ञान का उद्गम नहीं कहा जा सकता।

बुद्धिवाद का इतिहास - पश्चिमी बुद्धिवाद -

1. पार्मेनिडीज 2. हेराक्लीटस 3. डेमोक्राइटस

पाश्चात्य दर्शन में बुद्धिवाद का सर्वप्रथम उदाहरण यूनान के विचारक पार्मेनिडीज के दर्शन में मिलता है। जिनका कहना है कि - विश्व की परमार्थ सत्ता एक और अपरिवर्तनशील है किन्तु इन्द्रियाँ उसे अनेक और परिवर्तनशील बताती है। इसलिए इन्द्रियजन्य ज्ञान मिथ्या और भ्रामक है, सत्य ज्ञान देने का श्रेय सिर्फ बुद्धि का है।

हेराक्लीटस भी बुद्धिवाद का समर्थन करते हैं और इन्द्रियजन्य ज्ञान को भ्रांतिपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार सारा

सम्पूर्ण पास-बुक
AN EASY APPROACH FOR BEST SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

GRB BOOKS

विश्व परिवर्तनशील या प्रवाहमात्र है, किन्तु इन्द्रियाँ इसे स्थिर या केवल चीजें मानती हैं। पदार्थों का सत्य रूप बुद्धि द्वारा ही गृहीत होता है। परमाणुवादी डेमोक्राइटस भी बुद्धिवाद को स्वीकार करते हैं। इनका मत है कि परमाणु जो विश्व के मूलतत्व हैं, इतने सूक्ष्म हैं कि इनका ज्ञान इन्द्रियों को नहीं हो सकता, इनको जानने की क्षमता बुद्धि में है।

4. सुकरात — बुद्धिवाद का व्यापक प्रौढ़ रूप सुकरात के दर्शन में मिलता है। इनके अनुसार धारणात्मक ही यथार्थ ज्ञान है। अर्थात राम, श्याम आदि विशेषों का नहीं बल्कि मनुष्यता, पशुता आदि सामान्यों या धारणाओं का ज्ञान असली ज्ञान है। धारणाओं का ज्ञान बुद्धि से होता है, इन्द्रियों से नहीं क्योंकि इन्द्रियाँ विशेषों तक सीमित रहती हैं। राम, श्याम आदि विशेष मनुष्यों का प्रत्यक्ष इन्द्रिय से हो सकता है किन्तु मनुष्यता-जैसे सामान्यों का ज्ञान इनको नहीं हो सकता। सामान्यों को बुद्धि ही जान सकती है। इसलिए वास्तविक ज्ञान को धारणात्मक मानने के कारण बुद्धि को ही उसका साधन माना जा सकता है।

5. प्लेटो — बुद्धिवाद का सर्वश्रेष्ठ रूप यूनानी दर्शन में प्लेटो की रचनाओं में ही मिलता है। वे मानते हैं कि परमार्थतत्व जाति-प्रत्ययों या धारणाओं की समष्टि है। धारणाएँ अतीन्द्रिय और विचार-

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

स्वरूप हैं। इसलिए इनका ज्ञान बुद्धि द्वारा ही हो सकता है। विशेष पदार्थ धारणाओं के प्रतिबिम्ब या छाया मात्र हैं, परमार्थ तत्व नहीं। इन्द्रिय ज्ञान के साथ-साथ दूसरों से मिले ज्ञान या शब्दों और भावनाओं के आधार पर उत्पन्न विश्वासों को भी प्लेटो यथार्थ ज्ञान नहीं मानते हैं। क्योंकि वे सभी अनिश्चित होते हैं और कभी भी असत्य सिद्ध किए जा सकते हैं। किन्तु यथार्थ ज्ञान कभी असत्य नहीं होता क्योंकि इसके विषय अर्थात जाति-प्रत्यय सदा सत्य और एक समान रहते हैं। ऐसा ज्ञान बुद्धि द्वारा ही प्राप्त होता है।

बौद्धिक ज्ञान के आधार-भूत प्रत्ययों के विषय में इनका कहना है कि आत्मा अपने मौलिक रूप में शरीर रहित हो कर धारणाओं की महिमा में निवास करता है। वहाँ उसे उनका स्पष्ट ज्ञान होता है। जब शरीर धारण कर वह इस संसार में अवतरित होता है तो उसका मौलिक ज्ञान अत्यन्त धूमिल हो जाता है किन्तु स्मृति की तरह अस्पष्ट या अव्यक्त रूप में उसके अन्दर विद्यमान रहता है। यही सारे ज्ञान का आधार है अतः यथार्थ ज्ञान के लिए बुद्धि को अपने से बाहर नहीं जाना पड़ता बल्कि अपने अन्दर विद्यमान ज्ञान को ही प्रस्फुटित करना पड़ता है। दर्शन और गणित का अध्ययन इस

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes GRB BOOKS

कार्य में सहायक होता है। ज्ञान की प्रामाणिकता के विषय में प्लेटो का कहना है कि परम तत्व धारणाएँ हैं और उन्हीं का ज्ञान अस्पष्ट रूप से बुद्धि के अन्दर छिपा रहता है जिसे वह विकसित करती है। इस विकसित ज्ञान का आधार है कि वास्तविकता का ज्ञान है, इसलिए इसका सत्य होना, वास्तविकता के अनुकूल होना स्वाभाविक है, इसप्रकार बुद्धिजन्य ज्ञान वस्तुसंवादी या यथार्थ होता है।

6. डेकार्ट — डेकार्ट मानते हैं कि बुद्धिजन्य ज्ञान ही सदा सत्य रहता है। इन्द्रियों एवं दूसरों से प्राप्त ज्ञान सदा सत्य नहीं होते। इसलिए बुद्धि ही है जिसपर निर्भय होकर निर्भर किया जा सकता है। आत्मा का सारतत्व विचार है इसलिए बुद्धि हमारे मानसिक जीवन का सार भाग है। बुद्धि अपने आप ज्ञान का विकास करती है।

बौद्धिक ज्ञान के आधार

मूल तत्वों के विषय में डेकार्ट मानते हैं कि बुद्धि के अन्दर कुछ जन्मजात प्रत्यय या शक्तियाँ हैं जिनसे गणित की पद्धति द्वारा चिंतन करने पर सत्य और सार्वभौम ज्ञान की प्राप्ति होती है। बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता को हल करने के लिए डेकार्ट ईश्वर की सहायता लेते हैं। बौद्धिक ज्ञान के आधार जन्मजात प्रत्यय हैं। जन्मजात होने का अर्थ है कि ईश्वर ने जन्म के समय ही मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ प्रत्ययों या शक्तियों को भर दिया है। जन्मजात

सुगम पास-बुक

Notes

और उनमें प्रभूत ज्ञान हमें स्पष्टतः सत्य जान पड़ता है। वह विश्व के विषय में सत्य है क्योंकि उसका प्रतिष्ठाता ईश्वर है और ईश्वर सत्य-प्रिय है। इसलिए बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता ईश्वर की सत्य-प्रियता पर आधारित है।

अतिरिक्त सहज प्रत्ययों के दो और प्रकार के प्रत्ययों को डेकार्ट स्वीकार करते हैं वे हैं — 1. बाह्यार्थ-प्रभूत जो बाह्य वस्तुओं से उत्पन्न होते हैं और (2.) कल्पना-प्रभूत - जो कल्पना से उत्पन्न होते हैं जैसे — उड़ता घोड़ा पहले प्रकार के प्रत्यय मन से स्वतन्त्र रहते हैं जबकि दूसरे मन पर निर्भर रहते हैं। किन्तु सब में सहज प्रत्यय ही अधिक महत्वपूर्ण हैं और वे ही दार्शनिक ज्ञान के आधार हो सकते हैं क्योंकि वे असंदिग्ध सर्वदा सत्य और पूर्णतः स्पष्ट होते हैं जबकि कल्पना प्रभूत सदा सत्य होते हैं और बाह्यार्थ प्रभूत प्रत्ययों की सत्यता अनिश्चित रहती है। सहज प्रत्ययों को सर्वाधिक महत्ता देने के कारण ही और प्रकार के प्रत्ययों को स्वीकार करने पर भी डेकार्ट की गिनती बुद्धिवाद के प्रमुख संस्थापकों में होती है।

7 स्पीनोजा के अनुसार कल्पना और बुद्धि ज्ञान के दो साधन हैं।

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

कल्पना का प्रयोग हैं साधारण से भिन्न अर्थ में करते हैं। इसके अन्तर्गत इन्द्रिय स्मृति आदि से उत्पन्न सभी ज्ञान को वे सन्निहित मानते हैं। इनके अनुसार काल्पनिक ज्ञान अस्पष्ट और महत्त्वपूर्ण होता है तथा पदार्थों के वास्तविक रूप को व्यक्त नहीं करता है। संसार के सभी पदार्थ एक ही द्रव्य या ईश्वर के पर्याय। किन्तु कल्पना उन्हें अलग-अलग स्वतंत्र द्रव्यों के रूप में ग्रहण करती है। यथार्थ ज्ञान बुद्धि से मिलता है।

बौद्धिक ज्ञान के विषय में।

डेकार्ट की तरह स्पीनोजा भी मानते हैं कि केवल सहज प्रत्यय है जो इसका आधार है और उन्हीं प्रत्ययों से गणित की तरह निगमनात्मक विधि द्वारा दार्शनिक ज्ञान की सिद्धि होती है।

बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता के विषय में स्पीनोजा का अपना मत है। वे मानते हैं कि विचार और विस्तार चेतन और जड़ दोनों एक ही ईश्वर के ही धर्म हैं दोनों में एक ही द्रव्य ईश्वर व्याप्त है। हमारी सीमित बुद्धि इसके विचार गुण का पर्याय है और भौतिक जगत विस्तार गुण का इसलिए बुद्धि और बाहरी जगत में संवादिता का होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि बौद्धिक ज्ञान विश्व के अनुरूप अर्थात प्रामाणिक होता है क्योंकि एक ही ईश्वर के दोनों पर्याय हैं। जड़ - चेतन संबंधी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

8

Notes

स्पीनोजा है। इस मत को समानान्तर-वाद कहते हैं।

8. लाइब्निज — लाइब्निज भी मानते हैं कि ज्ञान के मूल आधार जन्मजात प्रत्यय हैं। मूल ज्ञान का आधार जन्मजात प्रवृत्तियों को मानने के कारण लाइब्निज के अनुसार मन न तो साफ कागज के समान है, न किसी खजाने की तरह जिसमें विभिन्न वस्तुओं की तरह साफ-साफ प्रत्यय रखे हों बल्कि वह एक पत्थर के टुकड़े की तरह है जिसमें मूर्ति बनने की क्षमता या शक्ति पहले से ही विद्यमान होती है। लाइब्निज के इस मत का आधार इनका तत्व-सिद्धान्त है। वे मानते हैं कि मूल तत्व चिद्बिन्दु हैं जो आध्यात्मिक और गवाक्षहीन हैं। इनमें बाहरी पदार्थों से प्रभावित होने या इन्हें प्रभावित करने के लिए कोई मार्ग नहीं है। इसलिए इनका सारा ज्ञान इन्हीं के अन्दर से उद्भूत हुआ है। अर्थात जन्मजात है, क्योंकि बाहर से कुछ ग्रहण करना इनके लिए सम्भव नहीं है। बुद्धिवाद की प्रामाणिकता के विषय में लाइब्निज का मत है कि हर एक चिद्बिन्दु छोटे पैमाने में विश्व का प्रतीक है। अब जो ज्ञान वह अपने अन्दर से उत्पन्न करता है वह उसके विषय में

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

Notes

GRB BOOKS

सत्य होगा ही इसलिए विश्व के विषय में भी सत्य होगा क्योंकि विश्व का प्रतीक होने के नाते अपने को जानने में वह विश्व को भी जान लेता है। ऐसा इसलिए होता है कि ईश्वर जो विश्व का विधाता है उसने सृष्टि के आदि में ही ऐसी व्यवस्था स्थापित कर दी है।

(9) वुल्फ और (10) हीगल- लाइब्नीज के बाद बुद्धिवाद के प्रमुख समर्थक वुल्फ हुए किन्तु इसका चरम विकास बहुतत्ववाद हीगल के दर्शन में हुआ। हीगल के अनुसार मूलतत्त्व एक सर्वव्यापक बुद्धि है और इसी का प्रकाश हमारी बुद्धि में है। इसलिए चूँकि वास्तविकता ही बौद्धिक है।

भारतीय दर्शन में उपर्युक्त प्रकार का बुद्धिवाद नहीं मिलता है क्योंकि यहाँ अनुभव से स्वतन्त्र करके बुद्धि को देखने की परम्परा नहीं है। अनुभव से असंबद्ध होकर सिर्फ बुद्धि द्वारा ज्ञान हो सकता है, यह सिद्धान्त किसी भी भारतीय दार्शनिक को मान्य नहीं है।

बुद्धिवाद की आलोचनाएँ भी की गयी हैं जो अनेक हैं—

1. बुद्धिवाद केवल बुद्धि को ही ज्ञान का एकमात्र साधन घोषित करता है और अनुभव की प्रमाणिकता अस्वीकार करता है किन्तु हम देखते हैं कि सभी अनुभव-जन्य ज्ञान भ्रांतिपूर्ण नहीं होते, इसलिए अनुभव जन्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

GRB BOOKS

ज्ञान भ्रांतिपूर्ण नहीं होते, इसलिए अनुभव मात्र को मिथ्या कह कर बहिष्कृत करना उचित नहीं है। इस बहिष्कार का कारण यह होता है कि अनुभव से सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान, जो आदर्श ज्ञान है, प्राप्त नहीं हो सकता।

2. किन्तु आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान इस आदर्श को ही अस्वीकार करते हैं। वे कहते हैं कि वस्तु जगत के विषय में वस्तुतः सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं है। ऐसा वही ज्ञान हो सकता है जो सदा सत्य रहे। किन्तु विज्ञानों का इतिहास बतलाता है कि प्रकृति के साथ ज्ञान की वृद्धि होती है और प्रायः ऐसा होता है कि जो कभी सत्य समझा जाता है। वही आगे चलकर असत्य सिद्ध होता है या नये ज्ञान के प्रकाश में परिवर्तित किया जाता है। इसलिए जो बुद्धिवाद का आदर्श है वह चरितार्थ होनेवाला नहीं है। प्राकृतिक विज्ञानों में पूर्णतः सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसलिए गणित विज्ञान को देखकर ही सारे-विज्ञान का आदर्श स्थिर कर लेना न्यायोचित नहीं है।

3. गणित के लिए पक्षपात के कारण बुद्धिवाद ज्ञान की पद्धति को गलत समझता है उसका आदर्श गणित है और गणित

पास-बुक
APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

की पद्धति निगमनात्मक है, इसलिए वह निगमनात्मक विधि को ही ज्ञान की पद्धति मानता है और आगमन-विधि की उपेक्षा करता है। किन्तु हम जानते हैं कि निगमन और आगमन दोनों समानतः महत्वपूर्ण हैं और किसी की भी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। ज्ञान की प्राप्ति में दोनों का प्रयोग होता है और इनके सम्मिलित प्रयोग से ज्ञान की वृद्धि होती है।

4. बुद्धि के स्वरूप के विषय में भी बुद्धिवाद की धारणा ठीक नहीं है। वह बुद्धि को इन्द्रिय सम्वेदनों से स्वतंत्र या निरपेक्ष मानता है, अतः बौद्धिक चिन्तन के लिए इन्द्रियानुभूति की आवश्यकता नहीं है। किन्तु आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि सभी तरह के ज्ञान का आधार इन्द्रियानुभूति है, प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, स्मृति, चिंतन सभी मानसिक क्रियाओं के मूल में संवेदन रहता है। इसलिए यह कहना कि बुद्धि बिलकुल स्वतंत्र है सत्य नहीं है परीक्षा करने पर बुद्धिवादियों के तथाकथित अनुभव निरपेक्ष या बुद्धिजन्य ज्ञान भी सापेक्ष सिद्ध होते हैं। वे कहते हैं कि 2+2=4 अनुभव निरपेक्ष है। किन्तु जब तक हम दो-दो वस्तुओं को जोड़ने पर चार होते नहीं देखते तब तक बुद्ध पूरा-पूरा समझ में नहीं आता है।

5. बुद्धि की शक्ति के विषय में भी बुद्धिवाद का मत सत्य नहीं है। वह मानता है कि बुद्धि से वस्तुओं के अस्तित्व

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। किन्तु यह सम्भावना नहीं है, किसी वस्तु के ज्ञान से जो निष्कर्ष निकलता है उसे ही बुद्धि बता सकती है किन्तु यह बताने की क्षमता इसमें नहीं है कि उस वस्तु का अस्तित्व है या नहीं। वस्तुओं के अस्तित्व का ज्ञान अनुभव से होता है, बुद्धि से नहीं।

6. बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता सिद्ध करने में भी बुद्धिवाद सफल नहीं होता है। बुद्धिवाद कहता है कि दो+दो का योग चार होता है। किन्तु वस्तु-जगत में दो+दो का योग कभी एक भी होता है। जैसे जल की दो बुन्दें जल की अन्य बुन्दों के साथ जब जोड़ी जाती है तो परिणाम चार बुन्द नहीं बल्कि एक बड़ी बुन्द होता है। ऐसी हालात में यह कहना कि सभी बौद्धिक ज्ञान वस्तु संवादी होता है न्यायोचित नहीं है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए प्लेटो ने प्रत्यय जगत को सत्य माना और वस्तु जगत को मिथ्या कह दिया। किन्तु मिथ्या कह देने से व्याख्या नहीं होती। डेकार्ट, स्पीनोजा और लाइबनिज ने ईश्वर की सहायता से बौद्धिक ज्ञान की प्रमाणिकता सिद्ध करने की चेष्टा की है किन्तु ईश्वर के अस्तित्व को ही अकाट्य रूप में प्रमाणित करने पर वे सफल

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

नहीं हो सके हैं।

7. बौद्धिक ज्ञान के सदा वस्तु-संवादी न होने से कैसे सच्चे अर्थ में सार्वभौम या अनिवार्य नहीं कहा जा सकता है। जब दो + दो मिलकर सदा चार नहीं होते तो कैसे कहा जा सकता है कि सभी बौद्धिक ज्ञान सार्वभौम और अनिवार्य अर्थात सत्य होते हैं, किन्तु इसीपर तो बुद्धिवादियों का नाज़ है कि बुद्धि सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान उत्पन्न करती है और इसी दावे के आधार पर उन्होंने अनुभव का तिरस्कार किया था। इसलिए इसके खंडित होने पर उनकी आधार शिला ही टूट जाती है।

8. यदि बौद्धिक-ज्ञान को सार्वभौम और अनिवार्य मान भी लिया जाए तो कठिनाइयों का अन्त नहीं होता है। यह ठीक है कि बौद्धिक ज्ञान का कुछ अंश सार्वभौम और अनिवार्य होता है, जैसे त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोणों के बराबर होता है किन्तु जैसा कि जर्मन दार्शनिक कान्ट ने कहा है, बौद्धिक ज्ञान के नवीनता का अभाव रहता है इसलिए बुद्धि द्वारा ज्ञान की वृद्धि नहीं हो सकती, कोई नया ज्ञान नहीं मिल सकता।

अतः इससे स्पष्ट होता है कि बुद्धिवाद एक सफल सिद्धान्त नहीं है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM